International Journal of Humanities, Commerce and Education
Volume 2 | Issue 6 | June 2026 | ISSN: 3108-0456 (Online)
Available online at: https://ijhce.com/
DOI: https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i6.104

जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक संरचनाओं एवं सामाजिक सेवाओं के स्थानिक प्रतिरूपः एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ0 पंकज कुमार[1] & डॉ0 संजय कुमार[2]

[1]असि0प्रो0 (भूगोल विभाग), जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर
[1]**Email:** drpankajgeography@gmail.com
[2]असि0प्रो0 (भूगोल विभाग), जे0वी0 जैन कॉलेज, सहारनपुर
[2]**Email:** sanjaykamboj@gmail.com

Received: 03 June 2026 | **Accepted:** 20 June 2026 | **Published:** 30 June 2026

सारांश

किसी भी क्षेत्र का ग्रामीण विकास उस क्षेत्र अथवा राष्ट्र के समग्र विकास का आधार होता है। ग्रामीण क्षेत्र की आधारभूत संरचना को विकसित संरचना तभी कहा जा सकता है, जब वहाँ की मूलभूत आवश्यकताएँ जनसंख्या के अनुपात में उपलब्ध हों। प्रस्तुत शोध–पत्र का उद्देश्य जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में उपलब्ध अवस्थापनात्मक सुविधाओं तथा सामाजिक सेवाओं के स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण करना है। प्रस्तुत अध्ययन में विद्युत प्रसार एवं ऊर्जा स्रोत, संचार सेवाएँ, शिक्षा सेवाएँ, पेयजल, चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ तथा प्रशासनिक सेवाओं जैसी सुविधाओं के वितरण और उपलब्धता का परीक्षण किया गया है। विभिन्न विकास खण्डों में उपरोक्त सुविधाओं के वितरण में गहरी असमानता है नगरों से दूर स्थित ग्रामीण क्षेत्रों में अपेक्षाकृत आधारभूत सुविधाओं का अभाव है। उपरोक्त अध्ययन में सहारनपुर के ग्रामीण विकास की योजनाओं के लिए क्षेत्रीय असमानताओं को दूर करने हेतु उपयोगी सुझाव एवं योजनाएँ प्रस्तुत करना है।

मुख्य शब्दः *ग्रामीण विकास, अवस्थापनात्मक संरचना, सामाजिक सेवाएँ, स्थानिक प्रतिरूप*

प्रस्तावना

ग्रामीण क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु आधारभूत संरचना व सामाजिक एवं आर्थिक सुविधाओं को विकसित किया जाना आदि आवश्यक है। अन्यथा इनके अभाव में सतत एवं सन्तुलित विकास की कल्पना नहीं की जा सकती। जनपद सहारनपुर कृषि उद्योग एवं सांस्कृतिक विविधता की दृष्टि से पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एक प्रसिद्ध जनपद है। समग्र विकास की दृष्टि से देखा जाए तो जनपद का विकास स्तर अपेक्षाकृत अच्छा है परन्तु ग्रामीण क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं के वितरण में असमानता है। कुछ क्षेत्रों में इनका अभाव भी दिखाई पड़ता है। भौगोलिक दृष्टिकोण से कुछ अवसंरचनात्मक सुविधाओं के स्थानिक प्रतिरूपों का अध्ययन क्षेत्रीय विकास की असमानताओं को समझने में सहायक है। प्रस्तुत शोध में इसी उद्देश्य को पूर्ण करने का प्रयास किया गया है।

क्षेत्र परिचयः

सहारनपुर जनपद उत्तर–प्रदेश राज्य के उत्तर पश्चिम किनारे पर स्थित प्रदेश का एक महत्वपूर्ण जनपद है। जनपद का विस्तार 29°34′ उत्तरी अक्षांश से 30°24′ उत्तरी अक्षांश तथा 77°07′ पूर्वी देशान्तर से 77°57′ पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। जनपद का कुल क्षेत्रफल 3689 वर्ग किमी० है। इसके उत्तर में हिमालय की शिवालिक पर्वत श्रेणियाँ, पश्चिम में यमुना नदी, दक्षिण में शामली व मुजफ्फरनगर जनपद की प्रशासकीय सीमाएँ हैं। सम्पूर्ण जनपद पाँच तहसील और 11 विकासखण्डों में विभाजित हुआ है। वर्ष 2011 के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 34,66,382 है, जो प्रदेश की कुल जनसंख्या का 1.73 प्रतिशत है।

This is an open access article under the Creative Commons Attribution-Non-Commercial 4.0 International License.
© The Author(s) 2026. IJHCE Published by Surya Multidisciplinary Publication.

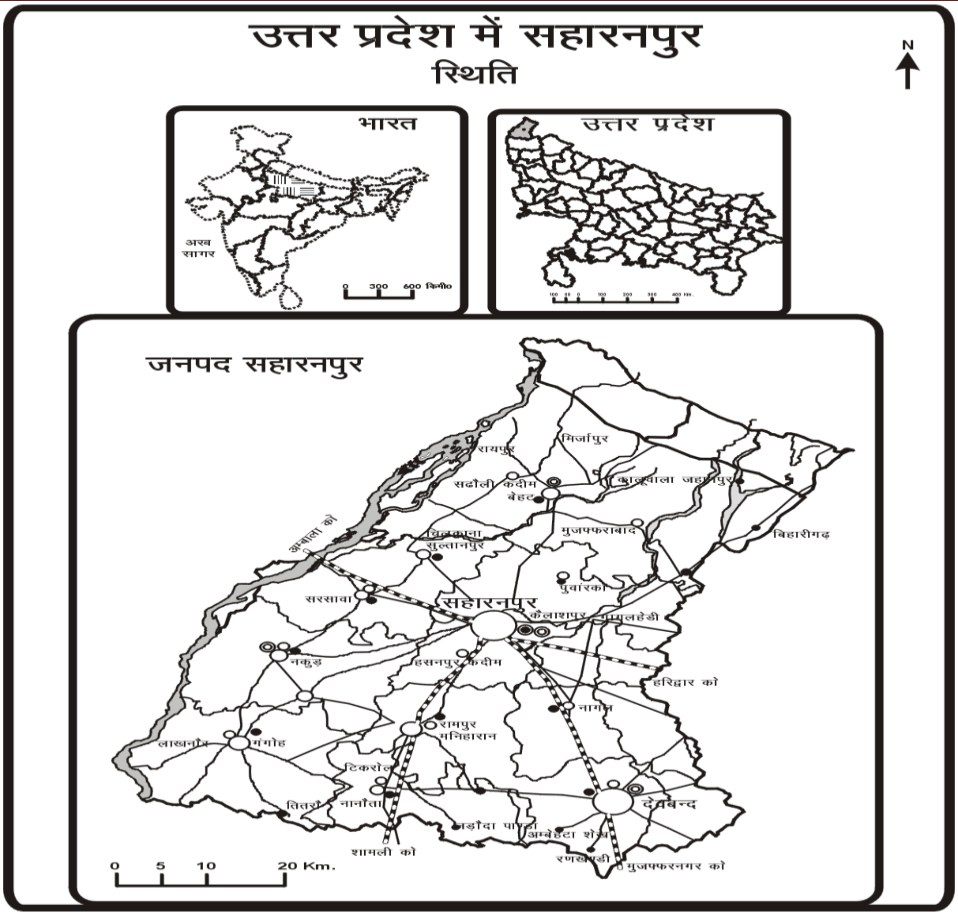

भौतिक स्वरूपः

सहारनपुर जनपद ऊपरी गंगा मैदान का अभिन्न अंग होते हुए भी धरातलीय विभिन्नताओं से सुसज्जित है। यदपि जनपद का अधिकांश भाग समतल जलोढ़ मैंदान का भाग है, जो अत्यन्त ही ऊपजाऊ है परन्तु साथ ही साथ यहाँ उप–पहाड़ी क्षेत्र भी पाया जाता है, जनपद का सबसे ऊँचा भाग उत्तर पश्चिम भाग में स्थित रहना गाँव (345 मीटर) तथा सबसे निचला भाग दक्षिण पूर्वी भाग में स्थित आखलोर खेडी गाँव (247) मीटर है। यहाँ की प्रमुख नदियाँ यमुना, हिंडन, पाँवधोई तथा ढमोला है। धरातलीय दशा एवं जलप्रवाह सम्बन्धी विशेषताओं के आधार पर जनपद को चार भौतिक प्रदेशों में शिवालिक पहाड़ी प्रदेश, उप पहाड़ी भावर या घाड़ प्रदेश, बांगर प्रदेश तथा खादर प्रदेश में बाँटा जा सकता है।

विधि तन्त्रः

प्रस्तुत शोध–पत्र के विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति हेतु आँकड़ों का संकलन मुख्य रूप से द्वितीयक स्रोतों से किया गया है। मुख्य रूप से डिस्ट्रिक्ट सैन्सस हैन्ड बुक, जिला सांख्यिकी पत्रिका, उत्तर–प्रदेश आर्थिक एवं सांख्यिकी, पत्रिका जिला योजना रिपोर्ट, नगर निकाय कार्यालयों तथा स्थानीय पंचायत से प्राप्त आँकड़ें उत्तर प्रदेश सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग लखनऊ से प्राप्त आँकड़ें, जिला मानचित्र, समाचार पत्र, शोध पत्र, विभिन्न पत्रिकायें, सरकारी वेबसाइट एवं रिपोर्ट आदि। आँकड़ों के विश्लेषण के लिए तालिका, आरेख तथा डायग्राम द्वारा प्रस्तुतीकरण किया जायेगा।

अध्ययन के उद्देश्यः प्रस्तुत शोध–पत्र के प्रमुख उद्देश्य निम्नवत् है।

1. अध्ययन क्षेत्र से सम्बन्धित स्थानीय संसाधनों की स्थिति के अनुसार, सामाजिक आर्थिक एवं सन्तुलित विकास का अध्ययन करना।
2. जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं की उपलब्धता का अध्ययन।
3. जनपद में सामाजिक सेवाओं के वितरण एवं स्थानिक प्रतिरूपों का विश्लेषण।
4. जनपद के विकासखण्डों के मध्य क्षेत्रीय असमानताओं की पहचान करना और ग्रामीण विकास हेतु नीतिगत सुझाव प्रस्तुत करना।

परिकल्पनाएँः

1. ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं का वितरण असमान होता है।
2. नगरों से दूर जाने पर ग्रामीण क्षेत्रों में सुविधाओं का स्तर कम होता जाता है।
3. सामाजिक सेवाओं के विकास में सड़क परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका है।

4. सामाजिक सेवाओं की उपलब्धता अधिक रूप से समृद्ध क्षेत्रों में अधिक होती है।
5. क्षेत्र का विकास मनुष्य की कार्यशैली एवं क्षेत्रीय संसाधनों व सुविधाओं एवं सरकारी योजनाओं के द्वारा होता है।

किसी भी क्षेत्र के विकास एवं परिवर्तन हेतु प्राकृतिक, सामाजिक, आर्थिक सांस्कृतिक राजनैतिक तथा प्राविधिक कारकों को विकसित करना अति आवश्यक है। जनपद में विभिन्न योजनाओं के माध्यम से एवं सरकारी प्रयासों से इन समस्याओं पर नियन्त्रण करने का प्रयास किया जा रहा है, जो निम्न प्रकार है।

विद्युत प्रसार एवं ऊर्जा स्रोतः

ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण को सुदृढ़ बनाने के लिए भारत सरकार द्वारा वर्तमान में अनेक योजनाएँ संचालित की जा रही है, जैसे प्रधानमंत्री सूर्य घर : मुफ्त बिजली योजना, आर०डी०एस०एस० योजना, दीनदयाल उपाध्याय ग्राम, ज्योति योजना, सौभाग्य योजना तथा कुसुम योजना आदि। जनपद सहारनपुर में विद्युतीकृत गांवों का प्रतिशत, घरेलू विद्युत कनेक्शन का वितरण सौर ऊर्जा संयन्त्रों की संख्या तथा प्रतिव्यक्ति विद्युत उपयोग के संकेतक जनपद के ग्रामीण विकास एवं जीवन स्तर का विश्लेषण करने में लिए पर्याप्त है। जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

तालिका संख्या 01 जनपद सहारनपुर में विभिन्न कार्यों में विद्युत उपयोग (लाख कि० वाट/घंटा)

क्रम सं०	मद	वर्ष (2023–24)
1.	घरेलू प्रकाश एवं लघु विद्युत शक्ति	11997
2.	वाणिज्यिक प्रकाश एवं लघु विद्युत	2498
3.	औद्योगिक विद्युत शक्ति	2492
4.	सार्वजनिक प्रकाश व्यवस्था	215
5.	कृषि विद्युत शक्ति	7359
6.	सार्वजनिक जलकल एवं मल प्रवाह उर्द्धन व्यवस्था	461
7.	विविध	90

स्रोत– अधिशासी अभियन्ता/अधीक्षण अभियन्ता विद्युत वितरण खण्ड, विद्युत विभाग, सहारनपुर

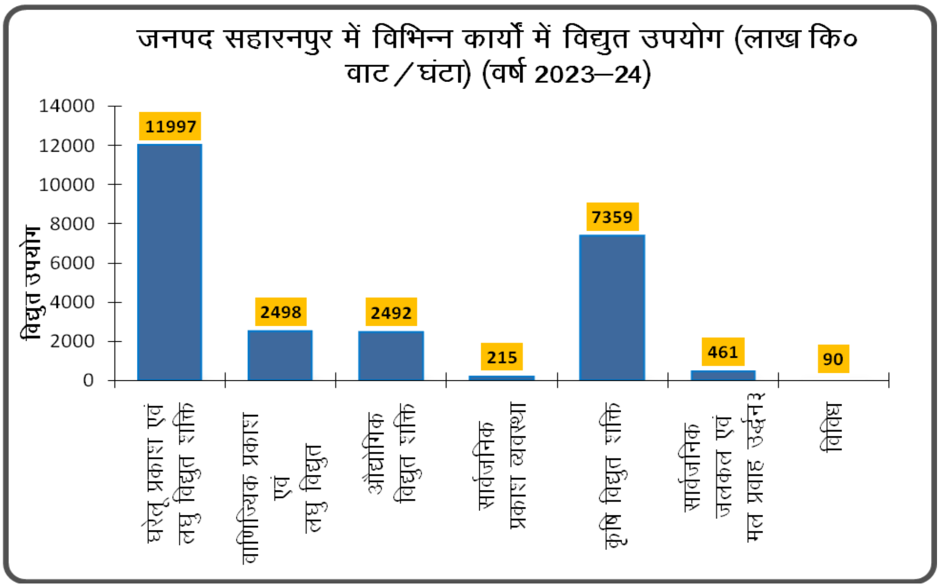

तालिका–02 जनवद में विकासखण्डवार विद्युत कनेक्शन की संख्या (2023–24)

क्रम सं0	विकासखण्ड	कनैक्शन की संख्या	क्रम सं0	विकासखण्ड	कनैक्शन की संख्या
1.	साढौली कदीम	34502	7.	गंगोह	44385
2.	मुजफ्फराबाद	42170	8.	रामपुर	34118
3.	पुवांरका	37572	9.	नागल	31879
4.	सरसावा	57240	10.	ननौता	27301
5.	नकुड़	46196	11.	देवबन्द	50096
6.	बलियाखेड़ी	53680			

स्रोत– अधिशासी अभियन्ता/अधीक्षण अभियन्ता, विद्युत वितरण खण्ड विद्युत विभाग, सहारनपुर

जनपद सहारनपुर में सभी विकास खण्डो में 100 प्रतिशत विद्युतीकरण का लक्ष्य लगभग पूर्ण किया जा चुका है। फिर जनपद में वास्तविक विकास का आकलन मात्र 100 प्रतिशत विद्युतीकरण से नही अपितु उसकी गुणवत्ता तथा उपलब्धता एवं उपभोग के स्तर से किया जाता है। जनपद में भविष्य की अवसंरचना को सुदृढ़ रखने के लिए भी स्मार्ट ग्रिड प्रणाली तथा नवीकरणीय उर्जा स्रोतों के विकास पर ध्यान दिन जाना आवश्यक है।

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में विद्युतीकरण के विकास से कृषि क्षेत्र, शिक्षा सुविधाओं, रोजगार, लघु कुटीर उद्योगों के विकास, तथा संचार के क्षेत्र में पर्याप्त सेवाओं का विस्तार हुआ है परन्तु अनेक समस्याऐं भी है जैसे विद्युत आपूर्ति में व्यवधान, गाँवों में फीड़रों पर ओवर लोडिंग, ट्रांसफॉर्मरों की क्षमता का सीमित होना तथा वोल्टेज की समस्या आदि जिनका समय पर समाधान अत्यन्त आवश्यक है। फिर भी जनपद सहारनपुर में विद्युतीकरण की स्थिति सन्तोष जनक है।

संचार सेवाएँ:

संचार सुविधाएँ किसी भी क्षेत्र के सामाजिक तथा आर्थिक विकास में परिवर्तन लाने वाला प्रमुख स्रोत है। वर्तमान युग तकनीकी का युग है। क्षेत्र के सर्वांगीण विकास हेतु संचार सेवाओं का जनसंख्या के अनुपात में उपलब्ध होना अनिवार्य है। अध्ययन क्षेत्र जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में विगत कुछ वर्षों में संचार अवसंरचना का उल्लेखनीय विस्तार हुआ है। मोबाइल, दूरसंचार, इंटरनेट, डाक सेवा तथा डिजिटल संचार माध्यमों के विकास ने ग्रामीण क्षेत्र के जीवन स्तर में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए है।

1. जनपद की सभी ग्राम पंचायते मोबाइल नेटवर्क जे जुड़ी है। अधिकांश गाँवों में 4G सेवा उपलब्ध है, तथा कुछ गाँव में 5G सेवाओं का भी विस्तार है।
2. जनपद की अनेक ग्राम पंचायतों में कॉमन सर्विस सेन्टर, ई–मित्र केन्द्र तथा पंचायत भवन इन्टरनेट से जुड़े हुए हैं। ऑनलाइन शिक्षा, ई–गवर्नेस, डिजिटल भुगतान और कृषि सूचना सेवाओं का उपयोग बढ़ रहा है। ग्रामीण क्षेत्रों में ब्रॉडबैंड कनेक्टिविटी का विस्तार हुआ है।
3. जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में भारतीय डाक विभाग की (188/1242). शाखा डाकघर सेवाएँ उपलब्ध है। स्पीड पोस्ट, आधार सेवाएँ, बैकिंग सेवाएँ, डाक बचत योजना ग्रामीण लोगो को उपलब्ध कराई गई है। साथ ही कुछ निजी कुरियर सेवा भी प्रमुख ग्रामीण बाजारों तक पहुँच चुकी है।
4. अधिकांश ग्राम पंचायतों में डिजिटल सेवा केन्द्र संचालित है। कृषक फसल बीमा, बाजार मूल्य तथा सरकारी योजनाओं की जानकारी मोबाइल ऐप तथा इन्टरनेट के माध्यम से ग्रामों में पहुँच रही है। पंचायत स्तर पर ऑनलाइन प्रमाणपत्र, पेशन, राशन कार्ड तथा अन्य अनेक सेवाओं का डिजिटलीकरण हुआ है।

तालिका संख्या 03 जनपद में विकासखण्डवार प्रमुख संचार सेवाएं (2023–24)

विकासखण्ड	डाकघर	टेलीफोन 2011	टेलीफोन 2024	बी०टी०एस० टावर
साढौली कदीम	13	23	0	0
मुजफ्फराबाद	21	39	32	14
पुवाँरका	12	18	10	4
बलियाखेड़ी	12	0	0	5
सरसावा	13	40	44	4
नकुड़	28	24	20	6
गंगोह	10	33	70	7
रामपुर	13	20	15	5
नागल	11	15	10	5
नानौता	12	28	6	4
देवबन्द	30	42	68	10
कुल योग	175	282	275	73

स्रोत– अधीक्षक डाक एवं तार, एस०डी०ओ० टेलीफोन

उपरोक्त तालिका से स्पष्ट है कि जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में डाकघर की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध हैं। जबकि टेलीफोन की संख्या में निरन्तर कमी आ रही है। वर्ष 2011 में जहाँ कुल 282 टेलीफोन कनेक्शन थे. वह वर्ष 2024 में घट कर 275 रह गए हैं इनका स्थान वर्तमान में मोबाइल ने ले लिया है। अध्ययन क्षेत्र में 200 व्यक्तियो पर किए गए

सेम्पल सर्वेक्षण में पाया गया की 18 से 60 वर्ष के लगभग 98 प्रतिशत पुरुष एवं 85 प्रतिशत महिलाएँ के पास मोबाइल की सुविधा प्राप्त है।

तालिका सं0 4: चयनित व्यक्तियों पर मोबाइल फोन की उपलब्धता (2024)

आयुवर्ग	18–25	26–40	41–50	51–60	कुल	चयनित	प्रतिशत
पुरूष	38	26	18	16	98	100	98
महिलाएँ	31	22	18	14	85	100	85
कुल	69	48	36	30	183	200	91.5

स्रोत– स्वयं सर्वेक्षण पर आधारित

शिक्षा सेवाएँ:

शिक्षा के बिना एक सभ्य एवं अनुशासित समाज की कल्पना करना असम्भव है। ग्रामीण और नगरीय दोनों क्षेत्रों में शिक्षा का महत्व समान है। क्योंकि भारत में जनसंख्या का 68.84 प्रतिशत भाग आज भी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करता है। जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा सेवाओं का विस्तार प्राथमिक स्तर से लेकर उच्च शिक्षण संस्थानों तक हुआ है। जनपद में राज्य सरकार एवं केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं से निरन्तर ग्रामीण शिक्षा की पहुँच व गुणवत्ता में सुधार आ रहा है। जनपद सहारनपुर में वर्ष 1991 में कुल साक्षरता दर 36.01 प्रतिशत थी, जो वर्ष 2011 में बढ़कर 68.74 प्रतिशत हो गयी है। इस अवधि में इसमें 32.73 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। जनपद को ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्र में साक्षरता में हुए परिवर्तन को निम्न सारणी द्वारा दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 5 जनपद सहारनपुर में ग्रामीण एवं नगरीय साक्षरता वृद्धि (1991–2011)

क्र०सं०	क्षेत्र	साक्षरता प्रतिशत		वृद्धि प्रतिशत	
		1991	2011	1991	2011
1.	ग्रामीण	36.01	68.74	22.71	32.73
2.	नगरीय	59.49	74.52	7.84	15.03
3.	जनपद	42.11	70.55	19.11	28.44

स्रोत– जिला सांख्यिकी पत्रिका, सहारनपुर–2014

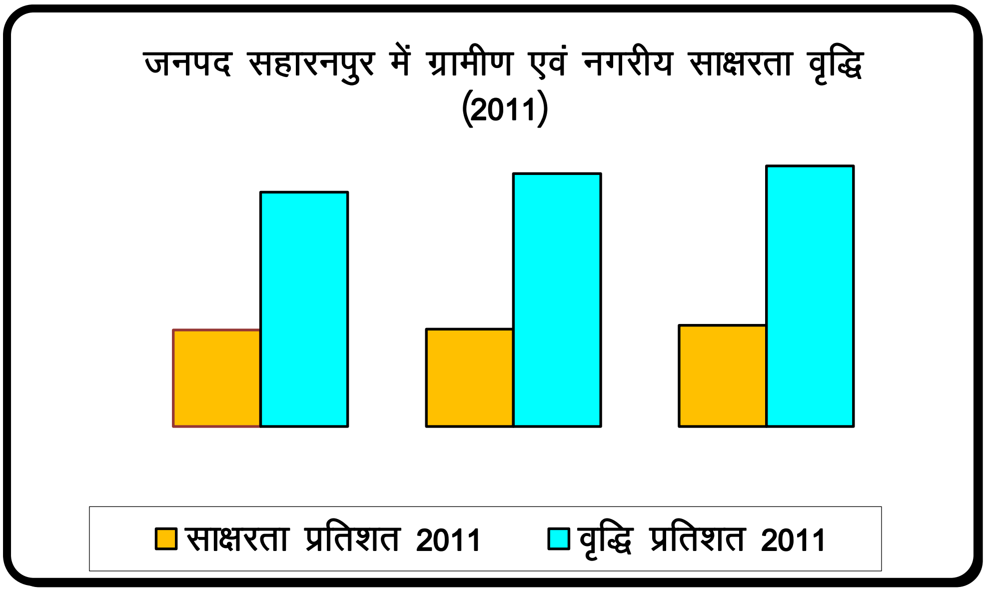

अध्ययन क्षेत्र में उपलब्ध शिक्षण संस्थाओं के वितरण, जनसंख्या दबाव तथा उनके स्थानिक संगठन को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया गया है।

1. जनपद सहारनपुर के लगभग सभी ग्रामों में प्राथमिक विद्यालय है। शिक्षा विभाग द्वारा संचालित सरकारी विद्यालय ग्रामीण क्षेत्रों में निःशुल्क शिक्षा प्रदान करते है। मध्यान्ह भोजन निःशुल्क पाठय पुस्तकें, यूनिफार्म एवं छात्रवृति योजनाएँ विद्यालयों में चलाई जा रही है।
2. जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में माध्यमिक तथा उच्च माध्यमिक स्तर पर राजकीय सहायता प्राप्त तथा निजी विद्यालय चलाऐ जा रहे है। बालिका शिक्षा को बढ़ाने के लिए अनेक कन्या विद्यालय भी खोले गए हैं जिनमें कला, वाणिज्य एवं विज्ञान विषयों की शिक्षा दी जा रही है।

3. अनेक विद्यालयों में कम्प्यूटर शिक्षा तथा डिजिटल शिक्षण संसाधनों का उपयोग भी बढ़या जा रहा है। राज्य सरकार द्वारा स्मार्ट कक्षा व डिजिटल शिक्षण तकनीक पर जोर दिया जा रहा है।
4. उच्च शिक्षा तथा व्यावसायिक शिक्षा हेतु आज भी जनपद के अनेक ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थी निकटवर्ती शैक्षणिक संस्थाओं पर निर्भर है। कुछ क्षेत्रों में निजी महाविद्यालय, आई०टी०आई० तथा पॉलिटेक्निक विद्यालय खोले गए हैं। कही–कहीं कुछ राजकीय विद्यालय भी है जिनकी संख्या कम है।

तालिका–06 जनपद सहारनपुर में विकासखण्डवार शिक्षण संस्थानों की संख्या (2023–24)

क्र०सं०	विकासखण्ड	प्राथमिक	उच्च प्राथमिक	मध्यमिक	कस्तूरबा	नवोदय
1	साढौली कदीम	118	35	21	1	0
2	मुजफ्फराबाद	204	66	28	2	0
3	पुवांरका	158	60	35	1	0
4	बलियाखेड़ी	160	49	20	0	0
5	सरसावा	159	46	28	1	1
6	नकुड़	143	45	41	1	0
7	गंगोह	158	42	36	0	0
8	रामपुर मनि०	111	31	23	0	1
9	नागल	128	49	22	0	0
10	नानौता	127	33	22	0	0
11	देवबन्द	104	29	31	1	0
	कुल	**1570**	**485**	**317**	**7**	**2**

उच्च शिक्षण संस्था:

उच्च शिक्षण संस्था न केवल सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, बल्कि आर्थिक विकास में भी मदद करती है। इनके द्वारा ग्रामीण स्तर पर रोजगार की उपलब्धता बढ़ती है। वर्ष 2023–24 के अनुसार जनपद सहारनपुर में उपलब्ध उच्च शिक्षण संस्थाओं का विवरण निम्न प्रकार है।

तालिका–07 जनपद में सहारनपुर में उच्च शिक्षण संस्थाओं का विवरण (2023–24)

क्र०सं०	संस्था का प्रकार	संख्या	प्रतिशत
1	राजकीय	8	7.76
2	सहायता प्राप्त	4	0.97
3	स्ववित्त पोषित	91	88.34
	योग	**103**	**100**

स्रोत– क्षेत्रीय उच्च शिक्षा अधिकारी कार्यालय, मेरठ, 2024

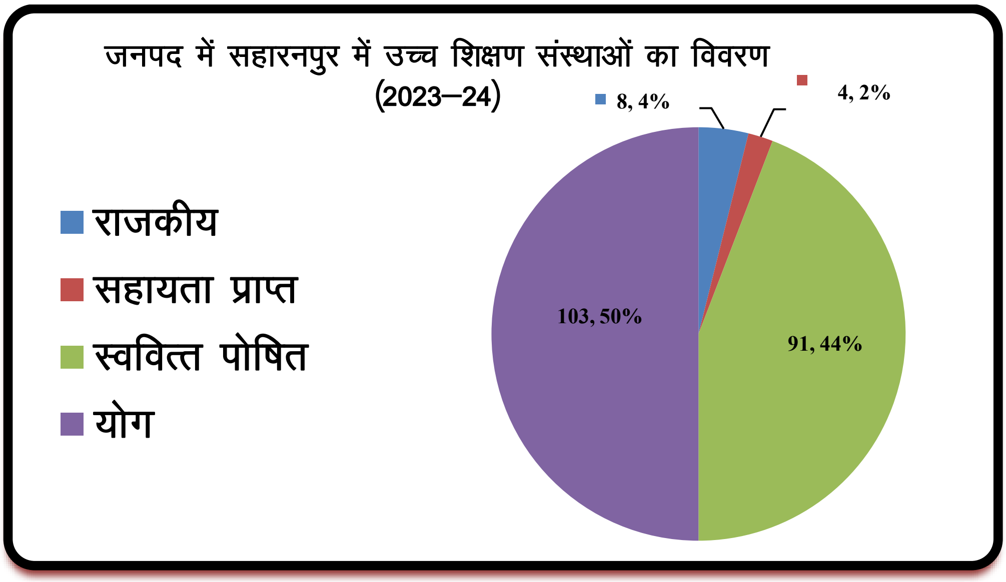

जलापूर्ती:

अवस्थापनात्मक सुविधाओं में से जलापूर्ती भी एक महत्वपूर्ण आधारभूत सुविधा है। पीने के पानी की उपलब्धता क्षेत्र की जनसंख्या की आधारभूत आवश्यकता का प्रमुख आधार है। जलापूर्ती कराने के सम्बन्ध में राज्य एवं केन्द्र सरकार द्वारा समय–समय पर अनेक योजनाएँ क्रियांवित की जाती है। जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में पेयजल की आपूर्ती हैण्डपम्प, नलकूप, इंडिया मार्क–II हैंडपम्प, सार्वजनिक नलकूप, पाइप आधारित ग्रामीण पेयजल योजनाएँ इसके साथ ही, सिंचाई हेतु जल की आपूर्ति कृषि विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जिससे जनपद के आर्थिक विकास को गति मिलती है।

तालिका संख्या–08 जल जीवन मिशन (ग्रामीण) के अन्तर्गत जनपद में पेयजल सुविधा की स्थिति (2023–24)

क्र०सं०	विकासखण्ड	पाइप लाइन (किमी० में)	पेयजल कनैक्शन की संख्या	आच्छादित ग्रामों की संख्या
1.	साढौली कदीम	166	18809	35
2.	मुफ्फराबाद	244	24495	51
3.	पुवॉरका	182	20464	39
4.	बलियाखेड़ी	205	22031	43
5.	सरसावा	151	17863	33
6.	नकुड़	143	17164	30
7.	गंगोह	195	22123	42
8.	रामपुर मनिहारान	97	12139	22
9.	नागल	162	19346	35
10.	नानौता	118	15022	26
11.	देवबन्द	102	18221	23
	योग ग्रामीण	**1765**	**209677**	**379**

स्रोत– अधि० अभि जलनिगम, सहारनपुर

जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में जलापूर्ती सेवाओं में पिछले कुछ वर्षो में उल्लेखनीय सुधार हुआ है। जल जीवन मिशन के माध्यम से पाइप आधारित पेयजल योजनाओं का तीव्र विस्तार हुआ है तथा हर घर जल का लक्ष्य किया जा चुका है। परन्तु जल की गुणवत्ता, तथा भू–जल संरक्षण जैसी चुनौतियों पर ध्यान देने की आवश्यकता है।

चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाएँ:

मानव को स्वस्थ एवं लम्बी अवधि तक जीवित रखने में चिकित्सकीय सुविधा महत्वपूर्ण भूमिका रखती है। यह ग्रामीण समाज की महत्वपूर्ण सामाजिक अवस्थापनात्मक सेवाओं में से एक है। जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का संचालन, उप–स्वास्थ्य केन्द्रो, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र, आयुष्मान अरोग्य मन्दिर, आशा कार्यकर्ताओं एवं राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन आदि के माध्यम से किया जा रहा है। उपरोक्त सभी सेवाओं का प्रमुख उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्र में सस्ती, सुलभ एवं गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य उपलब्ध कराना है। जनपद में उपलब्ध प्रमुख स्वास्थ्य सुविधाओं का विवरण निम्न प्रकार है।

तालिका सं0 09 जनपद में विकासखण्डवार एलोपैथिक चिकित्सा सेवा (2023–24)

क्र०सं०	विकासखण्ड	एलोपेथिक चिकित्सालय	सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र	प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र	समस्त में शैय्याओं की संख्या	डॉक्टर
1	साढौली कदीम	2	2	3	72	7
2	मुजफ्फराबाद	3	2	6	90	11
3	पुवांरका	1	2	3	72	21
4	बलियाखेड़ी	1	2	4	76	14
5	सरसावा	3	2	3	492	159
6	नकुड़	3	2	4	76	7
7	गंगोह	1	2	5	78	11

8	रामपुर मनि०	1	2	2	68	11
9	नागल	1	1	3	42	5
10	नानौता	1	2	3	72	8
11	देवबन्द	7	2	4	74	8
	कुल	**24**	**21**	**40**	**1212**	

स्रोतः– मुख्य चिकित्सा अधिकारी सहारनपुर

जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में चिकित्सा एवं स्वास्थ्य सेवाओं का निरन्तर विस्तार हो रहा है। उपरोक्त अनेक माध्यमों में से ग्रामीण जनसंख्या तक स्वास्थ्य सेवाएँ पहुँच भी रही है फिर भी विशेषज्ञ चिकित्सकों की उपलब्धता की कमी स्वास्थ्य अवसरंचना में आधुनिकीकरण तथा गुणवापूर्ण सेवाओं के विस्तार की आवश्यकता बनी हुई है।

प्रशासनिक सेवाएँः

प्रशासनिक सेवाओं से तात्पर्य उन सुविधाओं से है, जो ग्रामीण क्षेत्र पर ग्रामीण स्तर, न्याय पंचायत स्तर, विकास खण्ड स्तर तहसील स्तर तथा जनपद स्तर पर प्रत्येक निवासी को मिलती है। इन सेवाओं में मुख्य रूप से आय प्रमाण पत्र, जाति प्रमाण पत्र, निवास प्रमाण–पत्र, राशन कार्ड, आधार कार्ड, पैन कार्ड, जन्म प्रमाण पत्र, ड्राइविंग लाइसेंस, मृत्यु प्रमाण पत्र, भूमिक्रय–विक्रय, अभिलेख, उद्यम लाईसेंस, परिवहन साधन, विभिन्न प्रकार की पेशन, प्रधानमंत्री आवास, राशन, मनरेगा के अन्तर्गत रोजगार, आपदा राहत पूनर्वास आदि अनेक प्रमुख प्रशासनिक सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती है। जिन्हें ब्लाक स्तर पर खण्ड विकास अधिकारी, ग्राम विकास अधिकारी, पंचायत सचिव, लेखपाल, ग्राम प्रधान, ग्राम रोजगार सेवक, आशा एवं आंगनवाड़ी कार्यकताओं के माध्यम से प्रशासनिक सेवाएँ ग्रामीण क्षेत्रों में प्रदान की जा रही है।

जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासनिक सेवाओं का प्रमुख उद्देश्य शासन की उपरोक्त विभिन्न योजनाओ को ग्राम स्तर तक पहुँचाना, कानून–व्यवस्थ बनाएॅ रखना तथा ग्रामीण विकास को गति देना है।

तालिका 10 जनपद में विकासखण्डवार ग्राम पंचायतों में उपलब्ध सुविधाओं की स्थिति (2023–24)

क्र०सं०	विकासखण्ड	ग्राम पंचायत	ग्राम सचिवालय	इन्टरनेट से जुड़ी पंचायत	सामुदायिक शौचालय	जनसेवा केन्द्र
1	साढौली कदीम	84	84	84	84	6
2	मुजफ्फराबाद	98	98	98	98	7
3	पुवांरका	93	93	93	88	7
4	बलियाखेड़ी	75	75	75	75	6
5	सरसावा	103	103	103	103	9
6	नकुड़	85	85	85	82	6
7	गंगोह	98	98	98	96	8
8	रामपुर मनि०	54	54	54	52	4
9	नागल	74	74	74	60	6
10	नानौता	56	56	56	56	4
11	देवबन्द	64	64	64	56	5
	कुल	**884**	**884**	**884**	**850**	**68**

स्रोत– जिला पंचायत राज अधिकारी एवं ई–डिस्ट्रिक्ट मैनेजर

सहारनपुर में ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशासनिक सेवाओं का ढाँचा जिला, तहसील, विकासखण्ड तथा ग्राम पंचायत स्तर तक सुव्यवस्थित हैं। फिर सेवा वितरण की गुणवत्ता और पारदर्शिता बढ़ाने की आवश्यकता है।

अवस्थापनात्मक सुविधाओं का ग्रामीण विकास पर प्रभावः

जनपद सहारनपुर के आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास पर अवस्थापनात्मक सुविधाओं का गहरा प्रभाव दिखाई पड़ता है। सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में बिजली, सड़क, पानी, सिंचाई, संचार, शिक्षा, स्वास्थ्य जैसी अनेक सुविधाएँ ग्रामीण विकास की गति और गुणवता को प्रभावित कर रही है। इन सुविधाओं को उपलब्धता से यहाँ के ग्रामीण जीवन स्तर में निरन्तर सुधार हो रहा है तथा कृषि क्षेत्र, शिक्षा के क्षेत्र, स्वास्थ्य सेवाओं, आदि के सुधार के परिणामस्वरूप ग्रामीण अर्थव्यवस्था में निरन्तर सुधार आ रहा है। बैकिंग सेवाओं, इंटरनेट और संचार नेटवर्क के विस्तार से वित्तीय

समावेशन को बढ़ावा मिल रहा है। किसान ग्रामीण उद्यमी ऋण, बिमा, डिजिटल भुगतान तथा सरकारी योजनाओं का लाभ आसानी से प्राप्त कर रहे है। सामाजिक विकास की दृष्टि से भी उपरोक्त सुविधाओं का व्यापक प्रभाव पड़ा है। महिला की शिक्षा, स्वास्थ्य ओर आर्थिक गतिविधियों में भागीदारी बढ़ रही है। हालाँकि कुछ ग्रामिण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सुविधाओं का वितरण अभी भी असमान है। दूर स्थित पिछड़े ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क तथा डिजिटल सेवाओं के अभाव में विकास की गति कुछ मन्द है। जिसके लिए सन्तुलित क्षेत्रीय विकास के लिए नीति बनाने की आवश्यकता है।

समस्याएँ और सुझावः

यदपि जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक संरचनाओं एवं सामाजिक सेवाओं की दृष्टि से काफी विकास किया है किन्तु फिर भी इस प्रकार के भौगोलिक अध्ययन में अनेक व्यावहारिक, तकनीकी तथा प्रशासनिक समस्याएँ रह ही जाती है जैसे ग्रामीण क्षेत्रों में सड़को के निर्माण की गुणवत्ता में कमी होना, स्वास्थ्य केन्द्रो के होने के उपरान्त भी ग्रामीण क्षेत्रों में विशेषज्ञ चिकित्सकों का अभाव, उच्च शिक्षण संस्थानों की असमान उपलब्धता, इन्टरनेट एवं डिजिटल सेवाओं की असमान पहुँच, पेयजल की गुणवता में कमी तथा वित्तीय सेवाओं की पहुँच का सीमित होना है। परन्तु आज आधुनिक भू–स्थानिक तकनीकी विश्वसनीय ऑकड़ों क्षेत्रीय सर्वेक्षण तथा प्रभावी योजना निर्माण के माध्यम से इन समस्याओं का आसानी से सफल समाधान किया जा सकता है। जैसे सतत विद्युत आपूर्ती की व्यवस्था करके। डिजिटल कनेक्टिविटी में सुधार ला कर। सुरक्षित पेयजल योजनाओं का विकास करने। वित्तीय सेवाओं से और ऋण व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ और पारदर्शी करके। ग्रामीण क्षेत्रों में उच्च गुणवता युक्त सड़को का निर्माण करके। यातायात की व्यवस्था को मजबूत बनाकर। स्वास्थ्य सेवाओं की और अधिक बेहतर करके। सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं तक ग्रामीण व्यक्तियों की पहुँच और आसान बना कर सन्तुलित और सतत ग्रामीण विकास किया जा सकता है।

निष्कर्ष

प्रस्तुत शोध–पत्र के अध्ययन से स्पष्ट है कि जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक सेवाओं के विकास में विगत कुछ समय से उल्लेखनीय प्रगति हुई है, परन्तु इनके स्थानिक वितरण में असमानता है। आधारभूत सुविधाओं का विकास सहारनपुर नगर के निकट स्थित विकासखण्ड़ों में दूरस्थ स्थित क्षेत्रों की तुलना में अधिक हुआ है। जनपद मुख्यालय से दूर स्थित सुविधाओं की गुणवत्ता तथा उपलब्धता में अपेक्षाकृत कमी पाई गई है। प्राथमिक शिक्षा तथा प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाओं का विस्तार तो अधिकांश ग्रामीण क्षेत्रों में हुआ है परन्तु उच्च शिक्षा, विशेषज्ञ स्वास्थ्य सेवाओं और बैंकिंग सुविधाओं का वितरण असमान है। जिन क्षेत्रों में सड़क परिवहन, विद्युत तथा संचार सेवाएं अच्छी स्थिति में है केवल उन्ही क्षेत्रों में ही शिक्षा, स्वास्थ्य, व्यापार, कृषि तथा रोजगार के अवसर विकसित हो पाऐं है। जिन क्षेत्रों में आधारभूत सुविधाओं की कमी है वहाँ आर्थिक विकास की गति आज भी धीमी ही है। अतः निष्कर्षतः हम कह सकते है, कि जनपद के ग्रामीण क्षेत्रों में समावेशी सन्तुलित विकास सुनिश्चित करने हेतु मुख्यालय से दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों में भी अवस्थापनात्मक निवेश को बढाना होगा। साथ ही योजनाओं की नियमित निगरानी एवं जन भागीदारी को बढ़ा कर विकास कार्यों से को प्रभावी बनाना होगा।

संदर्भ सूची

[1]. बंसल, एस. सी. (2018). *सहारनपुर: भौगोलिक परिदृश्य.* मेरठ: मीनाक्षी प्रकाशन।

[2]. बंसल, एस. सी. (2016). *सहारनपुर: उत्तर प्रदेश का भूगोल.* मेरठ: मीनाक्षी प्रकाशन।

[3]. कुमार, नरेन्द्र (2022). *समन्वित ग्रामीण विकास एवं क्षेत्रीय नियोजन.* नई दिल्ली: कलमकार पब्लिशर्स प्रा. लि.।

[4]. कुमार, पंकज एवं कुमार, नरेन्द्र (2026). *जनपद सहारनपुर: पर्यावरणीय चुनौतियाँ एवं जनसंख्या परिदृश्य*।

[5]. कुमार, सुशील (2004). *ग्रामीण विकास एवं क्षेत्रीय नियोजन.* नई दिल्ली: अर्जुन पब्लिशिंग हाउस।

[6]. सिंह, बैजनाथ. *सामुदायिक ग्रामीण विकास.* भारत: राष्ट्रीय पुस्तक न्यास (एनबीटी)।

[7]. पवार, आर. एस. एवं शर्मा, श्रीकांत (2007). *समन्वित ग्रामीण विकास एवं प्रादेशिक नियोजन.* नई दिल्ली: डिस्कवरी पब्लिशिंग हाउस।

[8]. शर्मा, के. के. (सम्पा.). (1986). *सहारनपुर सन्दर्भ*।

[9]. *जिला सांख्यिकी पत्रिका, सहारनपुर*, विभिन्न अंक।

Cite this Article:

पंकज कुमार & संजय कुमार. (2026). जनपद सहारनपुर के ग्रामीण क्षेत्रों में अवस्थापनात्मक संरचनाओं एवं सामाजिक सेवाओं के स्थानिक प्रतिरूपः एक भौगोलिक अध्ययन. International Journal of Humanities, Commerce and Education, 2(6), 23–31.

Journal URL: https://ijhce.com/ ***DOI:*** https://doi.org/10.59828/ijhce.v2i6.104